

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 07-05-2025

विषय सूची

मानव विकास रिपोर्ट 2025: UNDP

उच्चतम न्यायालय ने 21 न्यायाधीशों की संपत्ति का ब्यौरा प्रकाशित किया

भारत में नौकरशाही

अरुणाचल प्रदेश में पूर्वोत्तर का पहला भूतापीय उत्पादन

संक्षिप्त समाचार

पिपराहा अवशेष

अहिल्याबाई होलकर

केंद्र सरकार 'सुरक्षित बंदरगाह' खंड में संशोधन की योजना बना रही है

58वीं ADB वार्षिक बैठक

इस्लामी सहयोग संगठन (OIC)

केंद्र ने सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस उपचार योजना अधिसूचित की

गगनयान मिशन 2027 की पहली तिमाही में चला गया

ऑपरेशन सिंदूर

शहरी रंग समरूपीकरण परिकल्पना

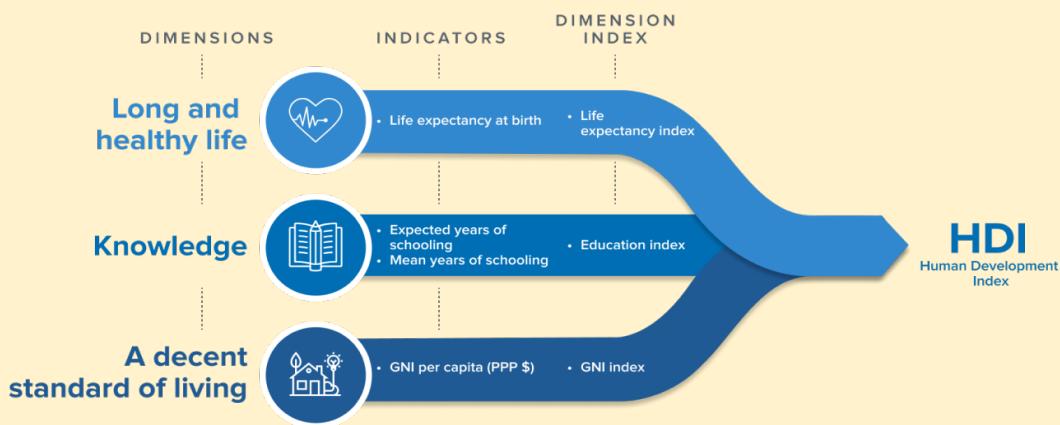
मानव विकास रिपोर्ट 2025: UNDP

संदर्भ

- हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) ने 2025 के लिए मानव विकास रिपोर्ट (HDR) जारी की, जिसमें जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और आय के स्तर में भारत की प्रगति पर प्रकाश डाला गया है।
 - इसका शीर्षक है ‘ए मैटर ऑफ चॉइस: पीपुल एंड पॉसिबिलिटीज इन द एज ऑफ एआई’, और यह भविष्य के विकास को आकार देने में एआई की भूमिका का पता लगाता है।

मानव विकास सूचकांक (HDI)

- पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब उल हक ने 1990 में HDI बनाया था और UNDP ने देश की सामाजिक-आर्थिक उपलब्धियों पर रिपोर्ट बनाने में इसका उपयोग किया था।
- यह तीन प्रमुख आयामों का मूल्यांकन करता है और इन तीन सूचकांकों के ज्यामितीय माध्य का उपयोग करके गणना की जाती है:
 - स्वास्थ्य को जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (SDG-3) द्वारा मापा जाता है।
 - शिक्षा का मूल्यांकन वयस्कों के लिए स्कूली शिक्षा के औसत वर्षों (SDG-4.4) और बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्षों (SDG-4.3) के माध्यम से किया जाता है।
 - जीवन स्तर का मूल्यांकन प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI) (SDG-8.5) का उपयोग करके किया जाता है, जिसे आय वितरण के लिए समायोजित किया जाता है।



- मानव विकास सूचकांक : यह देशों को उनके HDI मूल्यों के आधार पर चार विकास स्तरों में वर्गीकृत करता है:
 - निम्न मानव विकास: 0.550 से कम HDI मूल्य
 - मध्यम मानव विकास: 0.550 और 0.699 के बीच HDI मूल्य
 - उच्च मानव विकास: 0.700 और 0.799 के बीच HDI मूल्य
 - बहुत उच्च मानव विकास: 0.800 और उससे अधिक HDI मूल्य

सीमाँ और पूरक सूचकांक

- यद्यपि HDI एक मूल्यवान उपकरण है, यह असमानता, गरीबी, मानव सुरक्षा या सशक्तीकरण को नहीं दर्शाता है। इन अंतरालों को दूर करने के लिए, यूएनडीपी अतिरिक्त सूचकांक प्रदान करता है, जिनमें शामिल हैं:
 - असमानता-समायोजित HDI
 - लैंगिक असमानता सूचकांक
 - बहुआयामी गरीबी सूचकांक

मानव विकास सूचकांक: वर्तमान स्थिति

- आईएसलैंड (HDI मूल्य 0.972) सूचकांक में शीर्ष स्थान पर है, जिसके बाद नॉर्वे और स्विट्जरलैंड का स्थान है।

LEADERBOARD

HDI ranking and value (2023)

Rank	Country	HDI value
1	Iceland	0.972
2	Norway	0.970
2	Switzerland	0.970
4	Denmark	0.962
5	Germany	0.959
5	Sweden	0.959
7	Australia	0.958
8	Hong Kong, China (SAR)	0.955
8	Netherlands	0.955
17	United States	0.938
130	India	0.685

HDI: Human Development Index
Source: UNDP Human Development Report 2025

- दक्षिण सूडान 0.388 के साथ 193वें स्थान पर था।
- भारत ने अपने मानव विकास सूचकांक मूल्य को 2022 में 0.676 (133वें) से बढ़ाकर 2023 में 0.685 (130वें) कर लिया है, जो मध्यम मानव विकास श्रेणी में बना हुआ है।
 - 1990 के बाद से भारत के मानव विकास सूचकांक मूल्य में 53% से अधिक की वृद्धि हुई है, जो वैश्विक और दक्षिण एशियाई औसत दोनों से अधिक तेजी से बढ़ रहा है।
- भारत के पड़ोसियों में, चीन (75वें), श्रीलंका (78वें) और भूटान (127वें) भारत से ऊपर हैं, जबकि बांग्लादेश (130वें) को बराबर स्थान मिला है।
 - नेपाल (145वें), म्यांमार (149वें), पाकिस्तान (168वें) भारत से नीचे हैं।

भारत की HDI प्रगति के मुख्य बिंदु

- बढ़ी हुई जीवन प्रत्याशा: भारत में जीवन प्रत्याशा 1990 में 58.6 वर्ष से बढ़कर 2023 में 72 वर्ष हो गई, जो HDI के प्रारंभ से अब तक की सर्वोच्च वृद्धि है। आयुष्मान भारत, जननी सुरक्षा योजना और पोषण अभियान जैसी राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजनाओं ने इस वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- शिक्षा में प्रगति: औसत स्कूली शिक्षा अवधि 1990 में 8.2 वर्ष से बढ़कर 2023 में 13 वर्ष हो गई। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, समग्र शिक्षा अभियान और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इसमें अहम भूमिका निभाई।
- आर्थिक वृद्धि और गरीबी उन्मूलन: भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI) 1990 में \$2,167 से बढ़कर 2023 में \$9,046 हो गई। 2015-16 से 2019-21 के बीच 135 मिलियन भारतीयों ने बहुआयामी गरीबी से छुटकारा पाया।

रिपोर्ट में दर्शाई गई प्रमुख चुनौतियाँ और सुझाव

- एआई और मानव विकास: HDI 2025 यह तर्क देता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को मानव क्षमताओं को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए, न कि उन्हें प्रतिस्थापित करने के लिए।
 - यह सभी समुदायों को लाभ पहुंचाने के लिए साहसिक नीति निर्णयों की माँग करता है।
- बढ़ती असमानताएँ: वैश्विक असमानताएँ बढ़ रही हैं, जिससे तकनीकी प्रगति के बावजूद मानव विकास की गति धीमी हो रही है।
 - आय असमानता भारत की HDI को 30.7% तक कम कर देती है, जो इस क्षेत्र में सबसे अधिक है।
 - लिंग असमानता शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को प्रभावित कर रही है।
 - रिपोर्ट समावेशी AI नीतियों को लागू करने की सिफारिश करती है ताकि विकसित और विकासशील देशों के बीच के अंतर को कम किया जा सके।
- तीन प्रमुख कार्यक्षेत्र:

 - एक ऐसी अर्थव्यवस्था का निर्माण जहाँ मानव और AI साथ मिलकर कार्य करें।
 - नवाचार को बढ़ावा देना ताकि मानव क्षमताओं का विस्तार हो सके।
 - समावेशी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों में निवेश करना।

Source: TH

उच्चतम न्यायालय ने 21 न्यायाधीशों की संपत्ति का ब्यौरा प्रकाशित किया

संदर्भ

- भारत के मुख्य न्यायाधीश सहित सर्वोच्च न्यायालय के इकीस न्यायाधीशों ने शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर अपनी वित्तीय परिसंपत्तियों और देनदारियों का प्रकटीकरण किया है।

पृष्ठभूमि

- न्यायिक जवाबदेही भारत में लंबे समय से परिचर्चा का विषय रही है, विशेषतः वित्तीय खुलासे और नैतिक मानकों के मामले में।
- निर्वाचित प्रतिनिधियों या सिविल सेवकों के विपरीत, न्यायाधीशों को अपनी संपत्ति सार्वजनिक रूप से घोषित करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य नहीं किया जाता है।
- वर्तमान प्रकटीकरण पूर्ण न्यायालय के एक प्रस्ताव के बाद किया गया, जिसका उद्देश्य न्यायपालिका में जनता के विश्वास को बढ़ावा देना है।

प्रमुख घटनाक्रमों की समयरेखा

वर्ष	घटना
1997	मुख्य न्यायाधीश जे.एस. वर्मा के नेतृत्व में प्रथम पूर्ण न्यायालय प्रस्ताव में मुख्य न्यायाधीश को न्यायाधीशों द्वारा संपत्ति की घोषणा की सिफारिश की गई।
2009	पूर्ण न्यायालय ने सर्वोच्च न्यायालय की वेबसाइट पर न्यायाधीशों की संपत्ति का स्वैच्छिक खुलासा करने की अनुमति देने का संकल्प लिया।
2009	दिल्ली उच्च न्यायालय ने माना कि ऐसी घोषणाएँ आरटीआई अधिनियम, 2005 की धारा 2(एफ) के तहत “सूचना” हैं।
2019	संविधान पीठ ने निर्णय सुनाया कि आरटीआई अधिनियम के तहत मुख्य न्यायाधीश एक “सार्वजनिक प्राधिकरण” हैं और संपत्ति का खुलासा गोपनीयता का उल्लंघन किए बिना सार्वजनिक हित में है।

2025	सर्वोच्च न्यायालय ने अपने वेबसाइट पर कार्यरत न्यायाधीशों की पारिवारिक सम्पत्तियों सहित उनकी संपत्तियों का प्रकाशन प्रारंभ कर दिया है।
------	---

सुप्रीम कोर्ट द्वारा संपत्ति घोषणा का महत्त्व

- पारदर्शिता को बढ़ावा:** यह न्यायपालिका की खुलेपन और नैतिक आचरण के प्रति प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करता है।
- जन विश्वास का निर्माण:** यह न्यायिक अभिजात्यता या पक्षपात की धारणाओं को दूर करने में सहायता करता है।
- संवैधानिक नैतिकता:** यह भारतीय संविधान की प्रस्तावना और भाग IV – राज्य नीति के निदेशक सिद्धांतों में निहित ईमानदारी और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों के अनुरूप है।

न्यायपालिका में विश्वास और ईमानदारी की आवश्यकता

- संविधान की संरक्षक के रूप में न्यायपालिका:** न्यायपालिका संविधान की रक्षा करने, मौलिक अधिकारों को बनाए रखने और संतुलन सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- जवाबदेही सुनिश्चित करना:** न्यायपालिका में ईमानदारी की कमी न्यायिक विलंब या सत्ता के दुरुपयोग को जन्म दे सकती है, जिससे न्याय कमज़ोर होता है और असमानता बढ़ती है। सार्वजनिक संपत्ति खुलासा जवाबदेही सुनिश्चित करने की दिशा में एक कदम है।
- संस्थागत स्थिरता:** राजनीतिक अस्थिरता या सामाजिक अशांति के समय न्यायपालिका स्थिरता सुनिश्चित करने वाली शक्ति के रूप में कार्य करती है। एक विश्वसनीय न्यायपालिका संवैधानिक संकटों का समाधान कर सकती है और राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर सकती है।

निष्कर्ष

- न्यायपालिका में विश्वास और ईमानदारी एक न्यायसंगत समाज की आधारशिला हैं। ये केवल कानूनी न्याय ही नहीं बल्कि सामाजिक स्थिरता, लोकतांत्रिक मजबूती

और राज्य की नैतिक शक्ति को भी सुनिश्चित करते हैं। पारदर्शिता, नैतिक आचरण और संस्थागत सुधार आवश्यक हैं ताकि इस विश्वास को पोषित किया जा सके और बनाए रखा जा सके।

Source: TH

भारत में नौकरशाही

प्रसंग

- नागरिक सेवाएँ लोकतंत्र को बनाए रखने और सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन इसमें पार्श्व प्रवेशकों (लैटरल एंट्री) और अधिक पारदर्शिता की आवश्यकता है।

विषय

- भारत में आधुनिक योग्यता-आधारित नागरिक सेवा की अवधारणा 1854 में शुरू की गई थी। 1922 से भारतीय सिविल सेवा परीक्षा भारत में आयोजित होने लगी।
- स्वतंत्रता के पश्चात्, संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) को इन परीक्षाओं के संचालन की जिम्मेदारी सौंपी गई।
- प्रतेक वर्ष 21 अप्रैल को 'सिविल सेवा दिवस' मनाया जाता है, ताकि 1947 में सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा मेटकॉफ हाउस, नई दिल्ली में पहले बैच के सिविल सेवकों को दिए गए भाषण की स्मृति को सम्मानित किया जा सके।
- उन्होंने सिविल सेवकों को "भारत की इस्पात संरचना" कहा, जिससे उनकी राष्ट्र की एकता और अखंडता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया।

भारत में सिविल सेवाओं का इतिहास

- लॉर्ड कॉर्नवालिस को 'भारत में सिविल सेवाओं का जनक' माना जाता है।
- लॉर्ड वेलेस्ली ने सिविल सेवाओं के लिए युवा भर्तियों को शिक्षित करने के लिए 1800 में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
 - लेकिन कंपनी के निदेशकों ने 1806 में इसे इंग्लैंड के हैलीबरी में अपने स्वयं के ईस्ट इंडियन कॉलेज से बदल दिया।

- 1853 से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के निदेशक सिविल सेवकों की नियुक्ति करते थे। बोर्ड ऑफ कंट्रोल के सदस्यों को कुछ नामांकन करने की अनुमति थी।
- 1853 के चार्टर एक्ट ने संरक्षण प्रणाली को समाप्त कर दिया और खुली प्रतियोगी परीक्षाएँ शुरू कीं।
- भारतीय सिविल सेवा (ICS) के लिए पहली प्रतियोगी परीक्षाएँ 1855 में लंदन में आयोजित की गईं।
 - सत्येन्द्रनाथ टैगोर 1864 में ICS पास करने वाले पहले भारतीय थे।

शासन में सिविल सेवाओं की भूमिका

- सेवा वितरण:** वे कल्याणकारी योजनाओं को संचालित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार हैं कि सार्वजनिक सेवाएँ लक्षित लाभार्थियों तक पहुँचें, विशेष रूप से अंतिम छोर पर।
- कानून और व्यवस्था बनाए रखना:** सिविल सेवक कानून के शासन को बनाए रखते हुए और कानून प्रवर्तन एंजेसियों के साथ समन्वय करके शांति, न्याय और सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।
- चुनाव:** वे स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने और केंद्र और राज्यों दोनों में सत्ता के सुचारू हस्तांतरण को सुनिश्चित करने में सहायक रहे हैं।
- निर्बाध प्रशासन:** ऐसे कई उदाहरण हैं जब राज्यों को राष्ट्रपति शासन के अधीन रखा गया है, ऐसे समय में सिविल सेवकों ने निर्बाध प्रशासन सुनिश्चित किया है।
- नीति निर्माण:** वे नीति निर्माण में सरकारों को सलाह देते हैं और राजनीतिक कार्यपालिका द्वारा बनाई गई नीतियों को भी लागू करते हैं।

सिविल सेवाओं के समक्ष चुनौतियाँ

- राजनीतिक पूर्वाग्रह:** नौकरशाहों में तटस्थता की विशेषता तेजी से खत्म हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण कार्यों के निर्वहन में राजनीतिक पूर्वाग्रह पैदा हो रहा है।
 - इस घटना का कारण और प्रभाव नौकरशाही के सभी पहलुओं में बढ़ती राजनीतिक दखलंदाजी है, जिसमें पोस्टिंग और ट्रांसफर शामिल हैं।

- विशेषज्ञता की कमी:** नौकरशाह जो सामान्यवादी होते हैं, उनमें तकनीकी चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक विशेषज्ञता की कमी हो सकती है।
- भ्रष्टाचार:** नौकरशाही के सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण भ्रष्टाचार भी है, जो प्रायः दण्डित नहीं होता।
- लालफीताशाही:** अत्यधिक प्रक्रियात्मक औपचारिकताएँ प्रायः निर्णय लेने में देरी करती हैं और समय पर सेवा प्रदान करने में बाधा डालती हैं।
- मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ:** उच्च दबाव वाला वातावरण और लंबे समय तक काम करने से सिविल सेवकों की मानसिक सेहत पर प्रभाव पड़ता है।
- नवाचार का प्रतिरोध:** एक कठोर प्रशासनिक संस्कृति प्रयोग करने और नई प्रथाओं को अपनाने को हतोत्साहित करती है।
- पुराने नियम और प्रक्रियाएँ:** कई सेवा नियम औपनिवेशिक युग की विरासत हैं जो आधुनिक शासन आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं हैं।

संवैधानिक प्रावधान

- अनुच्छेद 309 संसद और राज्य विधानसभाओं को भर्ती और सेवा की शर्तों को विनियमित करने का अधिकार देता है।
- संविधान के अनुच्छेद 310 में कहा गया है कि संघ और राज्यों के सिविल सेवक क्रमशः राष्ट्रपति या राज्यपाल की इच्छा पर ही पद धारण करते हैं।
- अनुच्छेद 311 मनमाने ढंग से बर्खास्तगी के खिलाफ सिविल सेवकों के लिए सुरक्षा प्रदान करता है।
- अनुच्छेद 312 अखिल भारतीय सेवाओं, जैसे भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा और भारतीय वन सेवा के निर्माण की प्रक्रिया को रेखांकित करता है।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 315 से 323 संघ (यूपीएससी) और प्रत्येक राज्य (एसपीएससी) दोनों के लिए लोक सेवा आयोग (पीएससी) की स्थापना करते हैं।

नौकरशाही की कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए प्रशासनिक सुधार

- मिशन कर्मयोगी राष्ट्रीय कार्यक्रम:** यह भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है जिसे 2020 में सिविल सेवकों के प्रशिक्षण के लिए शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य सिविल सेवाओं को 'नियम आधारित' से 'भूमिका आधारित' कार्यप्रणाली और नागरिक केंद्रित बनाना है।
 - प्रशासन में डोमेन विशेषज्ञता लाने और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए सिविल सेवाओं में पार्श्व प्रवेश।
- ई-गवर्नेंस पहल:** शिकायत निवारण के लिए केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली (CPGRAMS), प्रदर्शन मूल्यांकन के लिए SPARROW और सेवा रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण।

निष्कर्ष

- भारत के विकास और शासन की दिशा तय करने में सिविल सेवकों की अहम भूमिका होती है, जिन्हें प्रायः विकसित भारत के निर्माण के रूप में जाना जाता है।
- कानून के शासन और संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए तटस्थ नौकरशाही को अनुचित राजनीतिक हस्तक्षेप से अलग रखा जाना चाहिए।
- राजनीतिक और स्थायी कार्यकारी के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखने के लिए, कैरियर नौकरशाहों की स्वायत्ता आवश्यक है।
 - इसमें पोस्टिंग, कार्यकाल और स्थानांतरण के संबंध में उचित स्वतंत्रता शामिल है।
- साथ ही, नौकरशाहों का ध्यान 'प्रक्रिया' से हटकर 'परिणामों' पर केंद्रित होना चाहिए।

Source: TH

अरुणाचल प्रदेश में पूर्वोत्तर का पहला भूतापीय उत्पादन

समाचार में

- पृथ्वी विज्ञान और हिमालय अध्ययन केंद्र (CESHS) ने अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कार्मेंग जिले के दिरांग में पूर्वोत्तर भारत के पहले भू-तापीय उत्पादन कुएँ की सफलतापूर्वक खुदाई की है।

परियोजना के बारे में

- दिरंग क्षेत्र एक मध्यम-से-उच्च ऐथाल्पी भू-तापीय क्षेत्र ($\sim 115^{\circ}\text{C}$) है, जिसकी भूवैज्ञानिक विशेषताएँ कुशल और कम प्रभावी ड्रिलिंग का समर्थन करती हैं।
- इस परियोजना में CESHS, नॉर्वेजियन जियोटेक्निकल इंस्टीट्यूट (NGI), आइसलैंड की कंपनी Geotropy ehf, और गुवाहाटी बोरिंग सर्विस (GBS) शामिल हैं।
- यह अरुणाचल प्रदेश सरकार और भारत के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा समर्थित है।
- यह ऊँचाई वाले क्षेत्र में स्वच्छ, पर्यावरण-अनुकूल ऊर्जा समाधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भू-तापीय ऊर्जा क्या है?

- भू-तापीय ऊर्जा पृथ्वी से प्राप्त ऊष्मा ऊर्जा है—‘जियो’ (पृथ्वी) + ‘थर्मल’ (ऊष्मा)।
- भू-तापीय संसाधन गर्म पानी के जलाशय होते हैं, जो प्राकृतिक रूप से मौजूद होते हैं या मानव द्वारा विभिन्न तापमानों और गहराइयों पर बनाए जाते हैं।
- यह पृथ्वी की सतह के नीचे मौजूद ऊष्मा का उपयोग सीधे तापमान नियंत्रण या विद्युत उत्पादन के लिए करता है।
- इसके लिए मध्यम-से-उच्च तापमान वाले संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो सामान्यतः विवर्तनिक गतिविधि के निकट पाए जाते हैं।
- इसके प्रमुख लाभों में कम लागत, वर्षभर विश्वसनीय संचालन, और स्थिर, नियंत्रित ऊर्जा आपूर्ति शामिल हैं—जो इसे सौर और पवन ऊर्जा जैसी अनियमित स्रोतों के साथ और भी मूल्यवान बनाता है।

क्या आप जानते हैं?

- भूतापीय ऊर्जा एक विश्वसनीय, 24/7 नवीकरणीय स्रोत है जो पृथ्वी की भूपर्फटी में उपस्थित ऊष्मा से प्राप्त होता है, जिसे उष्ण झरनों और गीजर के रूप में देखा जा सकता है।
- यह पूरे वर्ष उच्च क्षमता उपयोग प्रदान करता है।
- वैश्विक स्तर पर, अमेरिका, इंडोनेशिया, फिलीपींस, तुर्की और न्यूजीलैंड इसके उपयोग में अग्रणी हैं।
 - भारत में, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने 10 गीगावाट की क्षमता का अनुमान लगाया है।

भू-तापीय ऊर्जा के अनुप्रयोग

- भू-तापीय ऊर्जा विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाती है, जिसमें हीट पंप के माध्यम से इमारतों को गर्म या ठंडा करना, बिजली संयंत्रों द्वारा बिजली उत्पन्न करना, और प्रत्यक्ष-उपयोग अनुप्रयोगों के माध्यम से संरचनाओं को सीधे गर्म करना शामिल है।
- भू-तापीय ऊर्जा का उपयोग फलों, मेवों और मांस सुखाने, स्थानों को गर्म रखने, और नियंत्रित-परिस्थिति भंडारण के लिए किया जा सकता है—जो ऊँचाई वाले क्षेत्रों में कृषि और जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लिए महत्वपूर्ण है।

चिंताएँ

- भू-तापीय ऊर्जा सिस्मिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में उच्च-दबाव वाले जल प्रवाह के कारण हल्के भूकंप उत्पन्न कर सकती हैं।
- ड्रिलिंग और संसाधन अन्वेषण के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता होती है, जिससे लागत एक प्रमुख बाधा बन सकती है।
- व्यवहार्य भू-तापीय स्थल प्रायः विशेष क्षेत्रों में केंद्रित होते हैं जहाँ सक्रिय विवर्तनिक गतिविधि होती है।
- यदि ठीक से प्रबंधित न किया जाए, तो यह भूमि धंसाव, जल उपयोग विवाद, और छोटे गैस उत्सर्जन जैसे जोखिम उत्पन्न कर सकता है।

सुझाव और आगे की राह

- पूर्वोत्तर भारत में सफल खुदाई सतत ऊर्जा की खोज में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।
- भू-तापीय ऊर्जा कम-कार्बन, मजबूत ऊर्जा भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
- हालाँकि, इसके पूर्ण लाभ को प्राप्त करने के लिए निरंतर अनुसंधान, तकनीकी नवाचार, और सहायक नीतियों की आवश्यकता होगी।
- लागत को कम करने, ड्रिलिंग तकनीकों में सुधार करने, और भू-तापीय ऊर्जा को व्यापक रूप से ऊर्जा प्रणालियों में एकीकृत करने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सहयोग की आवश्यकता होगी।

Source :TH

संक्षिप्त समाचार

पिपरहवा अवशेष

समाचार में

- संस्कृति मंत्रालय ने सोथबीज्ज हॉना कॉना द्वारा पवित्र पिपरहवा अवशेषों की नीलामी को रोकने के लिए त्वरित कार्रवाई की है।

पिपरहवा अवशेष

- ये अवशेष पिपरहवा स्तूप से खुदाई के दौरान प्राप्त हुए थे, जिसे प्राचीन कपिलवस्तु—भगवान बुद्ध की जन्मस्थली—माना जाता है।
- इनका ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व अत्यधिक है।
- इनकी खोज 1898 में विलियम क्लैक्सटन पेपे द्वारा की गई थी और इन अवशेषों में अस्थि खंड, कलश, और सोना व रत्न जैसी भेंट शामिल हैं।
- एक कलश पर ब्राह्मी लिपि में लिखी गई एक अभिलेख पुष्टि करता है कि ये बुद्ध के अवशेष हैं, जिन्हें शाक्य वंश द्वारा संरक्षित किया गया था।

स्थिति

- इनमें से अधिकांश अवशेष 1899 में भारतीय संग्रहालय, कोलकाता में स्थानांतरित कर दिए गए थे और भारतीय कानून के अंतर्गत ‘AA’ पुरावशेषों के रूप में वर्गीकृत हैं, जिससे उनके हटाने या बिक्री पर प्रतिबंध है।
- यद्यपि अस्थि अवशेषों का एक हिस्सा सियाम के राजा को उपहार में दिया गया था, पेपे के वंशजों द्वारा संरक्षित कुछ अवशेष अब नीलामी के लिए सूचीबद्ध किए गए हैं।

Source: AIR

अहिल्याबाई होल्कर

समाचार में

- महाराष्ट्र सरकार 2025 में अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में उनके जीवन पर एक फ़िल्म बनाएगी।

अहिल्याबाई होलकर

- वह मालवा राज्य की होलकर महारानी थीं। उन्हें भारत की सबसे दूरदर्शी महिला शासकों में से एक माना जाता है।
- 18वीं शताब्दी में, मालवा की महारानी के रूप में, उन्होंने धर्म के संदेश को फैलाने और औद्योगिकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- वह अपनी बुद्धिमत्ता, साहस और प्रशासनिक कौशल के लिए व्यापक रूप से प्रसिद्ध हैं।

प्रारंभिक जीवन

- उनका जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के चोंडी में हुआ था।
- वह साधारण परिवार से थीं और उनके पिता ने उन्हें शिक्षित किया।
- उनके व्यक्तित्व ने मल्हारराव होलकर का ध्यान आकर्षित किया, जिन्होंने 1733 में उनका विवाह अपने पुत्र खंडेराव होलकर से कराया।
- पति की मृत्यु के बाद, उनके ससुर ने उन्हें सती होने से रोका और इसके बजाय उन्हें प्रशासन और युद्धकला का प्रशिक्षण दिया।

सत्ता में उदय

- मल्हारराव की 1766 में और उनके पुत्र की 1767 में मृत्यु के बाद, अहिल्याबाई ने पेशवा की स्वीकृति से मालवा का शासन संभाला और 11 दिसंबर 1767 को इंदौर की शासक बनीं।
- उन्होंने 28 वर्षों तक न्याय, बुद्धिमत्ता और प्रशासनिक उत्कृष्टता के साथ शासन किया और महेश्वर को सांस्कृतिक और आर्थिक केंद्र में बदल दिया।

योगदान

- उन्होंने उद्योगों को बढ़ावा दिया—विशेष रूप से महेश्वरी साड़ी व्यापार—कला को प्रोत्साहित किया और भारत भर में धार्मिक एवं सार्वजनिक कल्याण परियोजनाओं का समर्थन किया।
- उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान 1780 में काशी विश्वनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण में रहा।

विरासत

- ‘दार्शनिक महारानी’ के रूप में प्रसिद्ध अहिल्याबाई होलकर का निधन 13 अगस्त 1795 को हुआ।
- उनकी स्थायी विरासत देश भर में उनके द्वारा निर्मित अनेक मंदिरों, विश्राम गृहों और दान कार्यों में परिलक्षित होती है।

Source :TH

केंद्र सरकार ‘सुरक्षित बंदरगाह’ खंड में संशोधन की योजना बना रही है

समाचार में

- सरकार मध्यस्थ प्लेटफॉर्म के लिए दिशा-निर्देशों को संशोधित करने और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 79 के अंतर्गत “सुरक्षित बंदरगाह” सुरक्षा का पुनर्मूल्यांकन करने पर विचार कर रही है।

IT अधिनियम की धारा 79 के तहत ‘सुरक्षित बंदरगाह’

- IT अधिनियम की धारा 79 मध्यस्थों को तीसरे पक्ष की सामग्री के लिए देयता से सुरक्षित बंदरगाह सुरक्षा प्रदान करती है, जब तक कि वे कुछ शर्तों का पालन करते हैं।
- हालाँकि, धारा 79 (3) (बी) के तहत, यह सुरक्षा शून्य है यदि मध्यस्थ, अवैध सामग्री के बारे में वास्तविक ज्ञान या सरकारी नोटिस प्राप्त करने पर, इसे तुरंत हटाने या उस तक पहुँच को अवरुद्ध करने में विफल रहता है।

क्या आप जानते हैं?

- IT अधिनियम की धारा 69A, केंद्र सरकार को राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था जैसे कारणों से सूचना तक सार्वजनिक पहुँच को अवरुद्ध करने की अनुमति देती है, जिसके लिए 2015 के श्रेया सिंघल मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रक्रियात्मक सुरक्षा उपाय स्थापित किए गए हैं।

नवीनतम घटनाक्रम

- हाल ही में उठाए गए इस कदम का उद्देश्य फर्जी खबरों के प्रसार को रोकना है, खास तौर पर पहलगाम आतंकी

हमले के बाद, जिसके कारण दो भारतीय चैनलों सहित कई यूट्यूब चैनलों को ब्लॉक कर दिया गया था।

- सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने कहा कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को फर्जी खबरों के खिलाफ सक्रिय कदम उठाने की आवश्यकता हो सकती है, हालाँकि मुक्त भाषण के आसपास संवैधानिक चिंताओं के कारण वर्तमान में कोई नया कानून बनाने की योजना नहीं है।
- इसके बजाय, सरकार स्व-नियमन का पक्षधर है और प्रेस सूचना ब्यूरो की तथ्य जाँच इकाई को वैधानिक समर्थन देने का समर्थन करती है।
 - इस बीच, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय बॉम्बे हाई कोर्ट के उस फैसले को चुनौती देने की योजना बना रहा है, जिसने इस इकाई की सामग्री को हटाने और सुरक्षित बंदरगाह की स्थिति को रद्द करने की शक्ति को सीमित कर दिया है।

Source :TH

58वीं ADB वार्षिक बैठक

सन्दर्भ

- एशियाई विकास बैंक (ADB) के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की 58वीं वार्षिक बैठक मिलान, इटली में शुरू हुई।

विवरण

- इस बैठक में ADB के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल, ADB के सदस्य देशों के आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों के प्रतिनिधि शामिल होंगे।
- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भारत के 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की महत्वाकांक्षा—‘विकसित भारत’—को रेखांकित किया और ADB को भारत के विकास यात्रा में एक “मूल्यवान भागीदार” बताया।

एशियाई विकास बैंक (ADB)

- ADB एक प्रमुख बहुपक्षीय विकास बैंक है जो एशिया और प्रशांत क्षेत्र में सतत, समावेशी और लचीली वृद्धि का समर्थन करता है। यह 1966 में स्थापित हुआ था और इसके 69 सदस्य हैं, जिनमें से 50 इस क्षेत्र से हैं।

- **मुख्यालय:** मनीला, फ़िलीपींस
- **प्राथमिक लक्ष्य:** गरीबी उन्मूलन और सतत आर्थिक वृद्धि, समावेशी विकास और क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देना।
- **संरचना:**
- **बोर्ड ऑफ गवर्नर्स:** प्रत्येक सदस्य देश से एक प्रतिनिधि।
- **बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स:** बैंक के संचालन की निगरानी करने वाले 12 सदस्य।
- **अध्यक्ष:** बोर्ड ऑफ गवर्नर्स द्वारा निर्वाचित; ADB के प्रबंधन की देखरेख करता है।

Source: AIR

इस्लामी सहयोग संगठन (OIC)

संदर्भ

- भारत ने संगठन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (OIC) की उस बयान पर कड़ी आलोचना की, जिसमें पहलगाम आतंकी हमले का उल्लेख नहीं किया गया और कश्मीर पर पाकिस्तान के प्रचार को दोहराया गया।

OIC के बारे में

- **स्थापना:** 1969, रबात, मोरक्को
- **ट्रिगर घटना:** अल-अक्सा मस्जिद में आगजनी हमले के जवाब में गठित
- **मुख्यालय:** वर्तमान में जेदा, सऊदी अरब
- **सदस्यता:** संयुक्त राष्ट्र के ऐसे सदस्य देशों के लिए खुली जिनमें मुस्लिम बहुसंख्यक हैं (2024 तक 57 सदस्य देश)
- **लक्ष्य और अधिदेश:**
 - ▲ स्वयं को “मुस्लिम विश्व की सामूहिक आवाज” के रूप में प्रस्तुत करना
 - ▲ सदस्यों के बीच एकजुटता और एकता को बढ़ावा देना
- **सदस्यता एवं मतदान:**
 - ▲ पूर्ण सदस्यता के लिए विदेश मंत्रियों की परिषद में सर्वसम्मति आवश्यक

- ▲ पर्यवेक्षक दर्जा भी इसी प्रक्रिया का अनुसरण करता है
- ▲ **कोरम:** उपस्थित सदस्यों का दो-तिहाई
- ▲ **निर्णय:** प्राथमिकता से सर्वसम्मति द्वारा, या उपस्थित और मतदान करने वालों में दो-तिहाई बहुमत से

प्रमुख निकाय:

- **इस्लामिक शिखर सम्मेलन:** सर्वोच्च प्राधिकरण, जिसमें राज्यों के प्रमुख शामिल होते हैं, प्रत्येक तीन वर्ष में बैठक होती है।
- **विदेश मंत्रियों की परिषद (CFM):** प्राथमिक निर्णय लेने वाला निकाय, जो प्रतिवर्ष बैठक करता है।

Source: TOI

केंद्र ने सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस उपचार योजना अधिसूचित की

संदर्भ

- सरकार ने देशभर में सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस उपचार योजना की घोषणा की है।

परिचय

- यह योजना 5 मई 2025 से प्रभावी हो गई है।
- **आर्थिक कवरेज:** पीड़ितों को प्रति दुर्घटना प्रति व्यक्ति अधिकतम ₹1.5 लाख की वित्तीय सहायता मिलेगी।
- **क्रियान्वयन एजेंसियाँ:**
 - ▲ **राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (NHA):** केंद्रीय क्रियान्वयन एजेंसी।
 - ▲ **राज्य सड़क सुरक्षा परिषद:** प्रत्येक राज्य/केंद्रशासित प्रदेश के लिए नोडल एजेंसी।
 - ▲ पुलिस, अस्पतालों और राज्य स्वास्थ्य एजेंसियों के साथ समन्वय किया जाएगा।
- **उपचार अवधि:** दुर्घटना की तिथि से अधिकतम सात दिनों तक लाभ लागू होंगे।
- **गैर-निर्धारित अस्पतालों में उपचार:**
 - ▲ केवल स्थिरीकरण उद्देश्यों के लिए अनुमति प्रदान जाएगी।

- शर्तें आधिकारिक दिशानिर्देशों में निर्दिष्ट की जाएँगी।
- निगरानी तंत्र:** केंद्र सरकार योजना के क्रियान्वयन की निगरानी के लिए एक संचालन समिति का गठन करेगी।

Source: TH

गगनयान मिशन 2027 की पहली तिमाही में चला गया

संदर्भ

- केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री ने कहा कि गगनयान कार्यक्रम के तहत भारत की पहली मानव अंतरिक्ष उड़ान 2027 की पहली तिमाही में होने की संभावना है।

गगनयान मिशन

- उद्देश्य:** मानवों (तीन क्रू सदस्य) को निम्न पृथ्वी कक्षा में भेजने और उन्हें सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाने की क्षमता का प्रदर्शन करना।
- लॉन्च वाहन:** लॉन्च व्हीकल मार्क-3 (LVM3)।
- क्रू एस्केप सिस्टम (CES):** HLVM3 में CES होता है, जो त्वरित कार्यशील, उच्च दहन दर वाले ठोस मोटर्स द्वारा संचालित होता है। यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी आपात स्थिति में—चाहे लॉन्च पैड पर हो या आरोहण चरण के दौरान—क्रू मॉड्यूल और चालक दल को सुरक्षित दूरी पर ले जाया जा सके।
- कक्षीय मॉड्यूल:** ऑर्बिटर मॉड्यूल पृथ्वी की परिक्रमा करेगा और इसमें क्रू मॉड्यूल (CM) और सेवा मॉड्यूल (SM) शामिल होंगे। इसे आरोहण, कक्षीय चरण और पुनः प्रवेश के दौरान चालक दल की सुरक्षा के लिए डिजाइन किया गया है।
 - क्रू मॉड्यूल (CM):** यह एक रहने योग्य स्थान है, जो अंतरिक्ष में चालक दल के लिए पृथ्वी जैसी वातावरणीय स्थिति प्रदान करता है।
 - सेवा मॉड्यूल (SM):** यह कक्षा में रहने के दौरान CM को आवश्यक सहायता प्रदान करेगा। यह एक अप्रेशराइज्ड संरचना है, जिसमें तापीय प्रणाली, प्रणोदन प्रणाली, विद्युत प्रणाली, एवियोनिक्स प्रणाली और परिनियोजन तंत्र शामिल हैं।

- यह मानवयुक्त मिशन ISRO की पहली मानव अंतरिक्ष उड़ान होगी। अब तक केवल अमेरिका, रूस और चीन ने मानव अंतरिक्ष उड़ानें संचालित की हैं।

Source: TH

ऑपरेशन सिंदूर

संदर्भ

- भारतीय सशस्त्र बलों ने ‘ऑपरेशन सिंदूर’ शुरू किया, जो पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत जम्मू-कश्मीर में स्थित आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाकर संचालित किया गया। इन क्षेत्रों से भारत के विरुद्ध आतंकवादी हमलों की योजना बनाई जाती रही है।

परिचय

- ‘ऑपरेशन सिंदूर’ को भारतीय सैन्य इतिहास की अब तक की सबसे बड़ी और गहरी सैन्य कार्रवाई बताया जा रहा है।
- यह 1971 के युद्ध के बाद पहली पूर्ण पैमाने की त्रि-सेवा (थल, जल और वायु) सैन्य कार्रवाई है।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिया गया नाम—‘ऑपरेशन सिंदूर’—पहलगाम पीड़ितों को श्रद्धांजलि स्वरूप रखा गया है, जो अपने विश्वास के कारण मारे गए, जबकि उनकी सिंदूरधारी पत्नियों को बख्शा दिया गया था।

रणनीतिक लक्ष्य

- इस सैन्य अभियान में जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन के प्रशिक्षण ठिकानों को निशाना बनाया गया और नष्ट किया गया।
- भारत ने अपने सबसे आधुनिक हथियारों का उपयोग किया।
- इस अभियान में SCALP क्रूज मिसाइलों और HAMMER सटीक-निर्देशित हथियार शामिल थे, जिन्हें भारत के प्रमुख राफेल लड़ाकू विमानों से प्रक्षेपित किया गया।
- इसके अतिरिक्त, ‘लॉइटरिंग म्यूनिशन’ या ‘कामिकाजे ड्रोन’ ने वास्तविक समय की निगरानी प्रदान की और उभरते हुए उच्च-मूल्य वाले, गतिशील लक्ष्यों पर सटीक हमले किए।

Source: PIB

शहरी रंग समरूपीकरण परिकल्पना

संदर्भ

- एक हालिया वैश्विक अध्ययन ने ‘अर्बन कलर होमोजेनाइज़ेशन हाइपोथेसिस/शहरी रंग समरूपीकरण परिकल्पना’ को चुनौती दी है, जिसमें यह माना गया था कि शहरीकरण से पक्षियों के रंग अधिक समान और फ़िके हो जाते हैं।

परिचय

- अध्ययन ने 1,200 से अधिक पक्षी प्रजातियों का वैश्विक डेटासेट उपयोग करके शहरी वातावरण और पक्षियों के पंखों के रंग के बीच संबंध का विश्लेषण किया।
- यह लंबे समय से चली आ रही मान्यताओं को खारिज करता है और शहरीकरण और जैव विविधता के जटिल संबंध को प्रकट करता है।

अर्बन कलर होमोजेनाइज़ेशन हाइपोथेसिस क्या है?

- ‘अर्बन कलर होमोजेनाइज़ेशन हाइपोथेसिस’ का सुझाव है कि शहरीकरण के कारण शहरों के निर्मित वातावरण और प्राकृतिक क्षेत्रों में रंगों की विविधता में कमी आती है।

- इसके पीछे कारण हैं: आवास विखंडन, कुछ प्रजातियों की प्रधानता, और शहरी नियोजन में निश्चित रंग पैलेट का वर्चस्व।

नए अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

- शहरी वातावरण में फलने-फूलने वाले पक्षी अधिक रंगीन होते हैं, विशेष रूप से नीले, गहरे ग्रे और काले पंखों वाले।
 - मेलानिन-आधारित रंग (गहरा ग्रे/काला) प्रदूषित वातावरण में विषाक्त पदार्थों को बांधने में सहायता कर सकते हैं।
- इसके विपरीत, भूरा या पीले रंग वाले पक्षी शहरों में कम सफल होते हैं।
 - भूरा रंग, जो जंगल के निचले स्तरों में छलावरण के रूप में प्रभावी होता है, शहरी सेटिंग में कम अनुकूल हो सकता है, क्योंकि प्राकृतिक पृष्ठभूमि (जैसे पत्तियों का कचरा या मिट्टी) अनुपस्थित होती है।
- शहरों में शिकारियों का दबाव कम होने से पक्षी अधिक आकर्षक और रंगीन पंख अपना सकते हैं।

Source: TH